पिया मोहे स्वांत न आवहीं

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, ना कछु नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस घखे शरीर।।

पिया बिन कछुए न भावहीं, जानूं कब सुनों पिया बैन।
जोलों पिउ मुझे ना मिले, तोलों तलफत हों दिन रैन।।

नीर खारे भवसागर, और लेहेरां मारे मार।
बेटो बीच पछाड़हीं, वार न काहूं पार ।।

इत चल तूं हस्ती होए के, पेहेन पाखर गज घंट बजाए।
पैठ सकोड़ सुई नाके मिने, जिन कहूं अंग अटकाए।।

आतम बंधी आस पिया, मन तन लगे वचन।
कहे महामती कौन आवहीं,इत हुकम खसम के बिन।।